विदेश सचिव की नेपाल यात्रा: नई सरकार के साथ नई शुरुआत

समाचार-संदर्भ: 2 नवंबर 2026 | प्रकाशन: 3 नवंबर 2026

मुख्य परीक्षा: GS-II: भारत और पड़ोसी देशों से संबंध; अंतर्राष्ट्रीय संबंध।

प्रिलिम्स: भारत-नेपाल संबंध, 1950 की संधि, विदेश सचिव, एग्रेमाँ।



Original symbolic image: pcsmantra.com

मौलिक प्रतीकात्मक चित्र: pcsmantra.com

विदेश सचिव की यात्रा के बाद: प्रधानमंत्री-स्तरीय संवाद की तैयारी

घटनाक्रम: 5 नवंबर 2026 की वार्ता; 6 नवंबर की रिपोर्ट | **अद्यतन प्रकाशन:** 7 नवंबर 2026

4-5 नवंबर की काठमांडू यात्रा के दौरान विदेश सचिव विक्रम मिस्री ने नेपाल के नेतृत्व और अधिकारियों से चर्चा की। 5 नवंबर को प्रधानमंत्री बालेन्द्र शाह के साथ मुलाकात में भारत यात्रा की तैयारी पर बातचीत हुई। 6 नवंबर की रिपोर्ट में अधिकारियों के हवाले से शाह की तीन दिवसीय भारत यात्रा 22 नवंबर से प्रस्तावित बताई गई है। यह आगामी कार्यक्रम है, संपन्न यात्रा या हस्ताक्षरित समझौतों की सूची नहीं।

रिपोर्ट में यात्रा के अंत के संयुक्त वक्तव्य का हवाला देते हुए जल संसाधन, ऊर्जा, व्यापार, पारगमन और विमानन में सहयोग की समीक्षा तथा प्रधानमंत्री की आगामी यात्रा के संभावित परिणामों पर चर्चा का उल्लेख है। शाह ने अगस्त की आकस्मिक बाढ़ के समय भारत की त्वरित सहायता के लिए धन्यवाद भी दिया।

पुराने पाठ को कैसे पढ़ें: इस लेख में मूल 2 नवंबर की घोषणा के आधार पर लिखी 'यात्रा करेंगे' वाली पृष्ठभूमि अब 5 नवंबर की संपन्न सचिव-स्तरीय वार्ता तक आगे बढ़ गई है। केवल संभावित एजेंडा और वास्तव में हुई चर्चा अलग रखें। आगामी प्रधानमंत्री यात्रा से ठोस परिणाम तभी माने जाएँ जब उनकी घोषणा और क्रियान्वयन का प्रमाण उपलब्ध हो।

परीक्षा के लिए अर्थ: पड़ोस नीति में नियमित उच्चस्तरीय संवाद, आपदा-सहयोग और कनेक्टिविटी भरोसा बनाने के साधन हैं। बैठक की संख्या से आगे परियोजना की प्रगति, स्थानीय लाभ और समयबद्ध क्रियान्वयन देखना चाहिए।

इस अद्यतन के स्रोत

- 6 नवंबर: 5 नवंबर की मुलाकात और 22 नवंबर से प्रस्तावित यात्रा की रिपोर्ट

खबरों में क्यों

विदेश मंत्रालय ने **2 नवंबर 2026** को घोषणा की थी कि विदेश सचिव **विक्रम मिस्री** 4 और 5 नवंबर को नेपाल की दो दिवसीय आधिकारिक यात्रा करेंगे। नेपाल के विदेश मंत्रालय की प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार यह यात्रा नेपाल के विदेश सचिव **अमृत बहादुर राय** के निमंत्रण पर हुई। **बालेन्द्र शाह** के मार्च 2026 में प्रधानमंत्री बनने के बाद नई सरकार के कार्यकाल में भारत के विदेश सचिव की यह पहली यात्रा है। यह यात्रा 4-5 नवंबर को संपन्न हुई; इसमें हुई चर्चा और उसके बाद के विवरण का अद्यतन ऊपर के खंड में दिया गया है। नीचे का पाठ मूल घोषणा और उस समय की पृष्ठभूमि बताता है।

बुनियादी बात: विदेश सचिव भारत के विदेश मंत्रालय का प्रशासनिक प्रमुख और सबसे वरिष्ठ राजनयिक सिविल सेवक होता है; विदेश मंत्री राजनीतिक प्रमुख होते हैं। **सौजन्य भेंट** (courtesy call) वह औपचारिक मुलाकात है जिसमें कोई वार्ता-एजेंडा अनिवार्य नहीं होता। **एग्रेमाँ** (agrément) किसी राजदूत की नियुक्ति से पहले मेज़बान देश की औपचारिक पूर्व-सहमति है।

मूल घोषित कार्यक्रम

2 नवंबर की आधिकारिक घोषणा में बताया गया कार्यक्रम इस प्रकार था:

- **तिथि और स्थान:** 4 से 5 नवंबर 2026, काठमांडू। कार्यक्रम के अनुसार मिस्री 5 नवंबर को नई दिल्ली लौटने वाले थे।
- **मुख्य वार्ता:** नेपाल के विदेश सचिव अमृत बहादुर राय के साथ द्विपक्षीय चर्चा। घोषणा के अनुसार दोनों पक्ष संबंधों की पूरी विधा की समीक्षा करने और पारस्परिक हित के मुद्दों पर विचार साझा करने वाले थे।
- **दायरा:** भारतीय विदेश मंत्रालय ने द्विपक्षीय, क्षेत्रीय और वैश्विक मामलों पर चर्चा की बात कही है और इसे दोनों देशों के बीच नियमित उच्च-स्तरीय आदान-प्रदान की परंपरा बताया है।
- **सौजन्य भेंटें:** कार्यक्रम में नेपाल के वरिष्ठ नेताओं से सौजन्य भेंटें भी शामिल थीं।

एजेंडे पर क्या रहने की उम्मीद थी

आधिकारिक घोषणा केवल विषय-विस्तार बताती थी। यात्रा से पहले की रिपोर्टों के अनुसार बातचीत में ये मद्द सामने आ सकते थे:

- **प्रधानमंत्री शाह की भारत यात्रा की तैयारी:** नेपाल के प्रधानमंत्री बालेन्द्र शाह की संभावित भारत यात्रा की पृष्ठभूमि तैयार करना इस दौरे का केंद्रीय उद्देश्य माना जा रहा था। 6 नवंबर की रिपोर्ट में अधिकारियों के हवाले से यह यात्रा 22 नवंबर से तीन दिवसीय प्रस्तावित बताई गई है; यह अभी प्रस्तावित कार्यक्रम है, आधिकारिक रूप से पुष्ट अंतिम कार्यक्रम नहीं। यह होने पर पद संभालने के बाद शाह की पहली आधिकारिक द्विपक्षीय विदेश यात्रा होगी।
- **दोनों ओर नए राजदूत:** 2 नवंबर तक की स्थिति के अनुसार नेपाल के नए राजदूत-नामित **निश्चल नाथ पाण्डे** के लिए भारत की एग्रेमाँ की प्रतीक्षा चल रही थी और नेपाली दूतावास कई महीनों से राजदूत के बिना था; इसकी अद्यतन स्थिति उपलब्ध नहीं है। दूसरी ओर भारत के राजदूत-नामित **सुधाकार डलेला** 3 नवंबर को काठमांडू पहुँचे।
- **आपदा सहायता:** अगस्त में भोटे कोशी नदी में आई आकस्मिक बाढ़ के बाद राहत, पुनर्स्थापना और लापता लोगों के मामले में भारत की सहायता के जारी रहने की चर्चा अपेक्षित थी।
- **कनेक्टिविटी और ऊर्जा:** सड़क, रेल, हवाई और पारेषण-लाइन कनेक्टिविटी तथा जलविद्युत सहयोग पर प्रगति की समीक्षा। नेपाल लंबी अवधि में 35,000 मेगावॉट क्षमता का लक्ष्य रखता है और भारत उसकी बिजली का प्रमुख बाज़ार है।

- **व्यापार संधि की समीक्षा:** द्विपक्षीय व्यापार संधि में सेवाओं और निवेश-सुरक्षा जैसे मद्दों को जोड़ने की चर्चा रिपोर्टों में थी।

भोटे कोशी आपदा और उसके बाद की राहत-प्रक्रिया समझें: नेपाल की भोटे कोशी आपदा: FRLD ने 2.16 करोड़ डॉलर अनंतिम रूप से अलग रखे

बदलती राजनीतिक पृष्ठभूमि

नेपाल में **सितंबर 2025** के जेन-ज़ी आंदोलन के बाद के.पी. शर्मा ओली की सरकार गिरी थी। अंतरिम व्यवस्था के तहत हुए चुनाव के बाद **मार्च 2026** में राष्ट्रीय स्वतंत्र पार्टी के नेता बालेन्द्र शाह प्रधानमंत्री बने। मिस्री की यह यात्रा इसी नई सरकार के कार्यकाल में पहली है।

इससे पहले मिस्री **अगस्त 2025** में काठमांडू आए थे, तब ओली सरकार थी। **मई 2026** में उनकी नियोजित यात्रा स्थगित हो गई थी; प्रोटोकॉल से जुड़े कारण और नई सरकार की घरेलू प्राथमिकताएँ इसके पीछे बताई गईं। बीच के महीनों में नेपाल के विदेश मंत्री, वित्त मंत्री और गृह मंत्री भारत आ चुके हैं, और जून में राष्ट्रीय स्वतंत्र पार्टी के प्रमुख रावि लामिछाने ने भारत में प्रधानमंत्री से भेंट की थी। यानी मंत्री स्तर पर संपर्क बना रहा, पर विदेश सचिव स्तर की यात्रा में देरी रही।

संबंधों का स्थायी ढाँचा

1950 की शांति और मैत्री संधि दोनों देशों के संबंधों की आधारशिला है। इसी के ढाँचे में दोनों देशों के बीच **खुली सीमा** की व्यवस्था है, यानी नागरिक बिना वीज़ा के सीमा पार कर सकते हैं और एक-दूसरे के देश में रहने-काम करने की सुविधा पाते हैं। इसे लोकप्रिय भाषा में रोटी-बेटी का रिश्ता भी कहा जाता है। संधि की समीक्षा या संशोधन की माँग दोनों पक्ष उठा सकते हैं; नेपाल की ओर से यह माँग कई बार उठती रही है।

भारत की **पड़ोसी पहल** (Neighbourhood First) नीति में नेपाल प्राथमिक साझेदार है। ऊर्जा व्यापार इस संबंध का ठोस उदाहरण है: बाढ़ की तबाही के बावजूद नेपाल का भारत को बिजली-निर्यात जारी रहा।

ऊर्जा-साझेदारी की ताज़ा स्थिति पढ़ें: बाढ़-तबाही के बाद भी नेपाल का भारत को बिजली-निर्यात जारी: एक महीने में $39 मिलियन

चुनौतियाँ और संवेदनशील मुद्दे

संबंधों में कुछ मुद्दे बार-बार सामने आते हैं। **लिपुलेक-कालापानी क्षेत्र** को लेकर सीमा-विवाद का असर हाल के महीनों में द्विपक्षीय वातावरण पर दिखा है। इसके अलावा अग्निपथ योजना के बाद से भारतीय सेना में **गोरखा भर्ती निलंबित** है; नेपाल के भूतपूर्व सैनिकों के संगठनों ने इसे फिर शुरू करने की माँग उठाई है। ऐसे मुद्दों पर वार्ता में सीधा समाधान अनिवार्य नहीं होता, पर संवाद के रास्ते खुले रखना ही कूटनीति की कमी है।

आगे की राह

यात्रा की सफलता की कसौटी घोषणा नहीं, परिणाम होंगे: प्रधानमंत्री शाह की भारत यात्रा की प्रस्तावित तिथियों की आधिकारिक पुष्टि होना, दोनों देशों में नए राजदूतों का पदभार ग्रहण करना, बाढ़-सहायता का धरातल पर पहुँचना और ऊर्जा व कनेक्टिविटी परियोजनाओं में समयबद्ध प्रगति। संवेदनशील मुद्दों पर नियमित उच्च-स्तरीय संवाद ही विश्वास की भरमार करता है, और यही इस यात्रा का असली महत्व है।

मुख्य परीक्षा अभ्यास प्रश्न

नेपाल में जेन-ज़ी आंदोलन के बाद बनी नई सरकार के साथ भारत की कूटनीतिक सक्रियता की समीक्षा कीजिए। हालिया विदेश सचिव स्तरीय यात्रा के संदर्भ में द्विपक्षीय संबंधों के अवसर और चुनौतियाँ स्पष्ट कीजिए। (उत्तर 250 शब्दों में लिखिए। 15 अंक)

उत्तर की रूपरेखा

भूमिका में: जेन-ज़ी आंदोलन, अंतरिम चुनाव और मार्च 2026 में नई सरकार के गठन का संदर्भ दें; विदेश सचिव की 4-5 नवंबर की यात्रा को उच्च-स्तरीय संवाद की परंपरा से जोड़ें।

मुख्य भाग में: अवसरों में प्रधानमंत्री स्तरीय यात्रा की तैयारी, ऊर्जा व्यापार, कनेक्टिविटी, आपदा सहायता और व्यापार संधि की समीक्षा रखें। चुनौतियों में लिपुलेक-कालापानी विवाद, गोरखा भर्ती का निलंबन और संधि-समीक्षा की माँग शामिल करें। 1950 की संधि और पड़ोसी पहल नीति को ढाँचे के रूप में प्रयोग करें।

निष्कर्ष में: निष्कर्ष में: दें कि नियमित संवाद, समयबद्ध परियोजनाएँ और संवेदनशील मुद्दों पर संयम ही दोनों देशों के लोकतंत्र-समर्थित विश्वास को मजबूत करते हैं।

प्रिलिम्स परीक्षा अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1. भारत-नेपाल संबंधों के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

कथन 1: भारत और नेपाल के बीच शांति और मैत्री की संधि 1950 में हुई थी।

कथन 2: 1950 की संधि के ढाँचे में दोनों देशों के नागरिकों को एक-दूसरे के देश में बिना वीज़ा के आने-जाने और काम करने की सुविधा मिलती है।

कथन 3: इस संधि में संशोधन की माँग केवल भारत ही उठा सकता है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?

(a) केवल कथन 1 और 2

(b) केवल कथन 2 और 3

(c) केवल कथन 1 और 3

(d) कथन 1, 2 और 3

▼ उत्तर और व्याख्या

उत्तर: (a) 1950 की शांति और मैत्री संधि दोनों देशों के बीच खुली सीमा और नागरिकों की आवाजाही व आजीविका की सुविधा का आधार है। संधि की समीक्षा या संशोधन की माँग दोनों पक्ष उठा सकते हैं; नेपाल की ओर से यह माँग कई बार उठती रही है, इसलिए कथन 3 गलत है।

प्रश्न 2. राजदूत की नियुक्ति से जुड़ी एग्रेमाँ (agrément) प्रक्रिया के संदर्भ में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सही है?

(a) एग्रेमाँ मेज़बान देश की पूर्व औपचारिक सहमति है, जिसके बिना राजदूत पदभार ग्रहण नहीं कर सकता

(b) एग्रेमाँ संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा जारी किया जाने वाला राजनयिक दस्तावेज़ है

(c) एग्रेमाँ केवल युद्धकालीन राजनयिक नियुक्तियों पर लागू होता है

(d) एग्रेमाँ मिल जाने पर राजदूत मेज़बान देश के कानूनों से बाहर हो जाता है

▼ उत्तर और व्याख्या

उत्तर: (a) राजनयिक प्रथा में किसी राजदूत के नाम पर मेज़बान देश की सहमति पहले ली जाती है, इसी को एग्रेमाँ कहते हैं। यह द्विपक्षीय प्रक्रिया है, संयुक्त राष्ट्र से इसका संबंध नहीं है, और यह राजदूत को कानून से ऊपर नहीं रखती।

स्रोत

1. नेपाल विदेश मंत्रालय: भारत के विदेश सचिव की आधिकारिक यात्रा की प्रेस विज्ञप्ति, 2 नवंबर 2026
2. आकाशवाणी समाचार: विदेश मंत्रालय की घोषणा, 2 नवंबर 2026
3. विदेश मंत्रालय: विदेश सचिव की अगस्त 2025 नेपाल यात्रा की प्रेस विज्ञप्ति
4. यात्रा की पृष्ठभूमि और एजेंडे की विस्तृत रिपोर्ट, 2 नवंबर 2026
5. बालेन्द्र शाह की संभावित भारत यात्रा की तैयारी पर रिपोर्ट
6. काठमांडू से प्रकाशित रिपोर्ट, 2 नवंबर 2026